ikB

12 हार नहीं होती

लहरों से डरकर नौका पार नहीं होती,
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती।
नन्ही चींटी जब दाना लेकर चलती है,
चढ़ती दीवारों पर सौ बार फिसलती है।
मन का विश्वास रगों में साहस भरता है,
चढ़कर गिरना, गिरकर चढ़ना न अखरता है।
आखिर उसकी मेहनत बेकार नहीं होती,
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती।
डुबकियाँ सिंधु में गोताखोर लगाता है,
जा–जाकर खाली हाथ लौटकर आता है।
मिलते न सहज ही मोती गहरे पानी में,
बढ़ता दूना उत्साह इसी हैरानी में।
मुट्ठी उसकी खाली हर बार नहीं होती,
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती।
असफलता एक चुनौती है स्वीकार करो,
क्या कमी रह गई देखो और सुधार करो।
जब तक न सफल हो नींद चैन की त्यागो तुम,
संघर्षों का मैदान छोड़ मत भागो तुम।
कुछ किए बिना ही जय–जयकार नहीं होती,
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती।

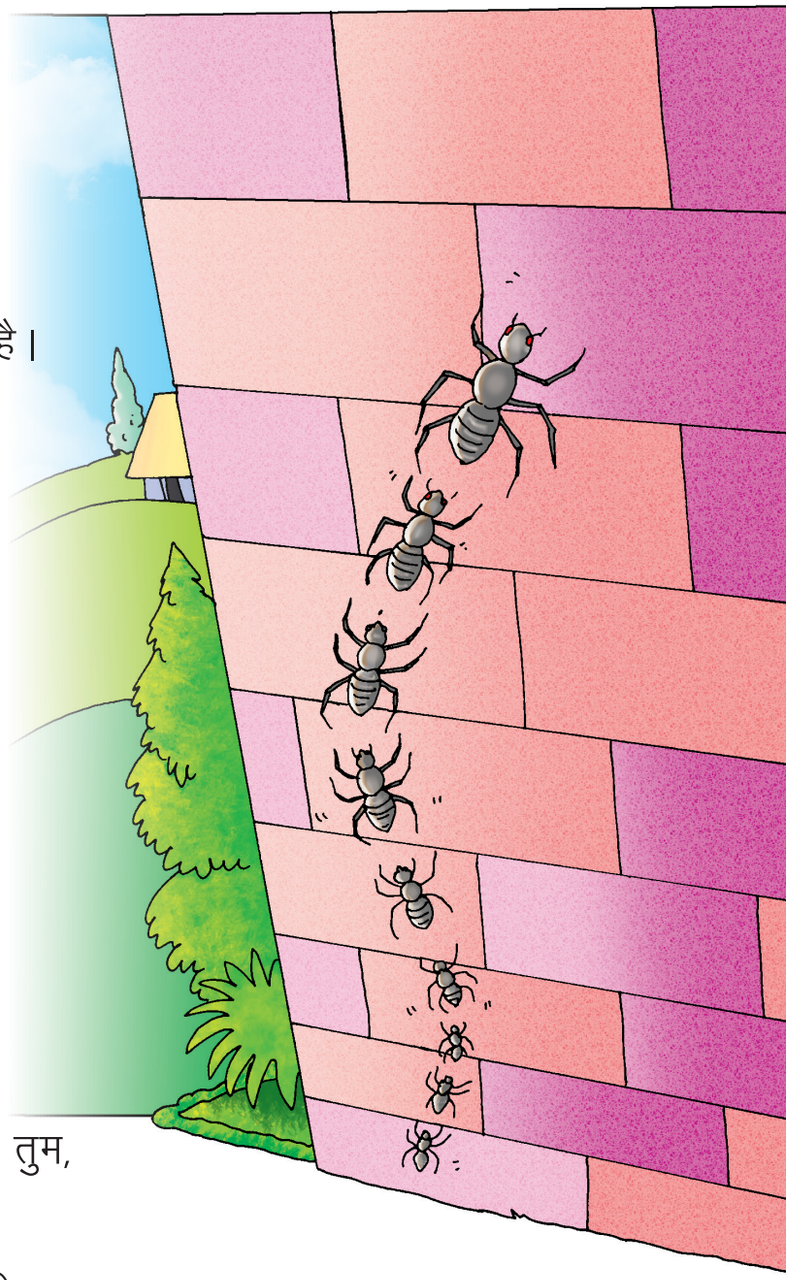

– हरिवंशराय बच्चन

अभ्यास

1. आइए, शब्दों के अर्थ जानें –

- अखरना – बुरा लगना
- उत्साह – जोश
- चैन – आराम
- चुनौती – ललकार
- रगों में – शरीर की नसों में
- सहज – सरल
- साहस – हिम्मत
- सिंधु – सागर
- संघर्ष – जूझना

2. कविता से –

(क) चींटी की मेहनत बेकार क्यों नहीं होती ?

____

____

(ख) गोताखोर सागर में क्या प्राप्त करने के लिए गोता लगाता है ?

____

____

(ग) व्यक्ति की जय–जयकार कब होती है ?

____

____

(घ) कविता में सफलता प्राप्त करने का क्या उपाय बताया गया है ?

____

____

3- vkidh ckr &

(क) अपनी कोई एक कमी बताएँ, जिसे आपने कोशिश करके दूर कर लिया हो। कमी को दूर करने के लिए आपने कौन–कौन सी कोशिशें की ?

(ख) अपना एक अनुभव बताएँ, जब आप कभी कहीं कीचड़ या फर्श पर फिसले हों।

(ग) आपको कभी न कभी किसी चीज से डर महसूस हुआ होगा, आपने उस डर का सामना कैसे किया ?

(घ) चींटियाँ लाइन में चलती हैं। आप कब–कब लाइन में चलते हैं ?

4- dfork ls vkx &

(क) नन्ही चींटी कौन–कौन से दाने लेकर चलती है ? आपने उसे दाने उठाते हुए कब–कब देखा? चर्चा करें।

(ख) नन्ही चींटी जब दाना लेकर चलती है तब वह कहाँ जाती है ? अपने साथियों के साथ मिलकर चर्चा करें।

(ग) 'चढ़ती दीवारों पर सौ बार फिसलती है।'
चींटी दीवार पर चढ़ सकती है। नीचे कुछ जीवों के चित्र दिए गए हैं। बताएँ, इनमें कौन–से जीव कमरे की दीवार पर चढ़ सकते हैं –

5- Hkk"kk dh ckr &

(क) आखिर उसकी मेहनत बेकार नहीं होती।

इस वाक्य में 'बेकार' शब्द में 'बे' उपसर्ग लगा है। ऐसे ही दिए गए उपसर्गों से दो–दो शब्द बनाएँ –

बे	⟶	बेख़बर	बेरोजगार
अनु	⟶	_____	_____
वि	⟶	_____	_____
उप	⟶	_____	_____
सु	⟶	_____	_____

(ख) चींटी दाना लेकर चलती है।

इस वाक्य में चलने का काम चींटी ने किया है। इसलिए यह कर्ता है।

नीचे कुछ वाक्य दिए गए हैं। इनमें से (कर्ता) छाँटकर लिखें –

1. राजीव मीठे आम खाता है। _____
2. बच्चा गेंद से खेल रहा है। _____
3. बंदर पेड़ पर उछल–कूद कर रहा है। _____
4. कोमल अपने भाई की पुस्तक पढ़ती है। _____

6- ;g Hkh dj% &

नीचे कुछ 'शब्द' और 'चित्र' दिए गए हैं, इनकी सहायता से कहानी को पूरा करें–

किसी पर एक रहती थी। एक दिन जंगल में लग गई। सभी अपनी जान बचाने के लिए इधर–उधर भागने लगे। तभी चिड़िया अपनी चोंच में पानी लेकर आई और आग बुझाने लगी। यह देख सभी उसका मजाक उड़ाने लगे, फिर भी ने हार नहीं मानी और अपना काम करती रही। पूरा दिन बीत गया पर की कोशिश में कोई कमी नहीं आई। की इस कोशिश को देख, सभी का हौसला भी बढ़ गया। देखते–देखते सभी ने की को बुझा दिया।

dN dke djk ¼dN vkj i<½

नर हो, न निराश करो मन को।

कुछ काम करो, कुछ काम करो,
जग में रहकर कुछ नाम करो।
यह जन्म हुआ किस अर्थ अहो,
समझो, जिससे यह व्यर्थ न हो।

कुछ तो उपयुक्त करो तन को,
नर हो, न निराश करो मन को।

सँभलो कि सुयोग न जाय चला,
कब व्यर्थ हुआ सदुपाय भला?
समझो जग को न निरा सपना,
पथ आप प्रशस्त करो अपना।

अखिलेश्वर हैं अवलंबन को,
नर हो, न निराश करो मन को।

निज गौरव का नित ज्ञान रहे,
'हम भी कुछ है', यह ध्यान रहे।
सब जाए अभी, पर मान रहे,
मरणोत्तर गुंजित गान रहे।

कुछ हो, न तजो निज साधन को,
नर हो, न निराश करो मन को।

प्रभु ने तुमको कर दान किए,
सब वांछित वस्तु–विधान किए।
तुम प्राप्त करो उनको न अहो,
फिर भी किसका यह दोष कहो।

समझो न अलभ्य किसी धन को,
नर हो, न निराश करो मन को।

किस गौरव के तुम योग्य नहीं?
कब कौन तुम्हें सुख भोग्य नहीं?
जन हो तुम भी जगदीश्वर के,
सब हैं जिसके अपने घर के।

फिर दुर्लभ क्या उसके जन को?
नर हो, न निराश करो मन को।

–मैथिलीशरण गुप्त